माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में वैयक्तिक चेतना और प्रणय-भाव

डॉ० पुष्पा कुमारी

शोध सारांश -

माखनलाल चतुर्वेदी प्रसिद्ध कवि, नवीनता के पक्षधर गद्यकार, पौराणिक नाटककार, यथार्थवादी कहानीकार और निर्भीक एवं क्रान्तिकारी पत्रकार थे। माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में वैयक्तिक चेतना और प्रणय-भाव का सुंदर एवं गहन समन्वय मिलता है। माखनलाल चतुर्वेदी मुख्यतः एक कवि हैं। वस्तुतः उनके सभी काव्य-संग्रह राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति को समर्पित है, किन्तु समर्पण की एंकातिकता को भंग करते हुए चतुर्वेदीजी की कुछ कविताएं उनकी वैयक्तिक चेतना आर प्रणय-भाव से आप्लावित है। माखनलाल चतुर्वेदीजी का प्रेम सम्बन्धी दृष्टिकोण दूरदर्शी एवं रहस्यात्मक है। त्याग एवं बलिदान की नींव पर आधारित प्रेम अंततः वैयक्तिक चेतना और प्रणय-भाव को स्वयं में आत्मसात कर लेता है।

कुंजी शब्द - भारतीय आत्मा, वैयक्तिक चेतना, प्रणय-भाव, हिमकरीटिनी, समर्पण।

प्रस्तावना -

‘एक भारतीय आत्मा’ के नाम से विख्यात आधुनिक हिन्दी काव्य व्योम का एक जगमगाता सितारा माखनलाल चतुर्वेदी प्रसिद्ध कवि, नवीनता के पक्षधर गद्यकार, पौराणिक नाटककार, यथार्थवादी कहानीकार और निर्भीक एवं क्रान्तिकारी पत्रकार थे। उनकी जीवन-यात्रा 1889 ई0 से प्रारंभ होकर 1968 ई0 में अपने अंतिम पड़ाव पर पहुँची। किन्तु यशष्वी रचनाकार माखनलाल चतुर्वेदी अपनी रचनाओं में अमर हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में युग परिवेश-

’एक भारतीय आत्मा’ कवि के जीवन का लगभग पाँच दशक परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़े भारतवर्ष को निरंतर अपनी लेखनी के हथियार से मुक्त कराते रहने के लिए समर्पित रहा। तत्कालीन समय राजनीतिक उथल-पुथल का भी था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की दो विचारधाराएं

अपने-अपने सिद्धांतों के अनुरूप पल्लवित-पुष्पित हो रहा थे। हिन्दी साहित्य पर उन विचारधाराओं का भरपूर असर पड़ा। छायावादी हिन्दी साहित्य में इसका रूप साकार होने लगा। महात्मा गाँधी के विचारों से प्रभावित और प्रेरित होकर चतुर्वेदीजी स्वतंत्रता-संग्राम में सक्रिय रूप से शामिल हुए। सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन के समर्थक कवि माखनलाल चतुर्वेदी को ब्रिटिश सरकार द्वारा कई बार जेल भेजा गया। जेल जाने के परिणामस्वरूप चतुर्वेदीजी की लेखनी अपेक्षाकृत ज्यादा धारदार होने लगी। जिसका असर उनकी हिमकिरीटिनी, समर्पण, युग चरण आदि काव्य-संग्रह के रूप में प्रतिफलित होता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य की एक अन्य धारा--स्वच्छंदतावाद, जो बंधन का तिरस्कार करनेवाली सहज मानवीय वृति के रूप में चतुर्वेदीजी की रचनाओं में प्रस्फुटित हुई। जिसके अनुरूप स्वच्छंदतावादी काव्यधारा के युग पुरुष माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाएं आजादी के रणबाँकुरों की पथ-प्रदर्शिका बनी।

माखनलाल चतुर्वेदी का रचना संसारः-

समकालीन रचनाकारों से इतर माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाओं की प्रत्येक विधा उनकी बहुमुखी प्रतिभा का परिचायक है। उनकी कृतियों में प्रमुख हैं-

- **काव्य संग्रह-** हिमकिरीटिनी (सन् 1943), हिमतरंगिनी (सन् 1949), माता (सन् 1951), युगचरण (सन् 1956), समर्पण (सन् 1956), वेणु लो गूँजे धरा (सन् 1960), मरण ज्वार (सन् 1963), बीजुरी काजल आँज रही (सन् 1964)।
- **गद्य साहित्यः-** साहित्य देवता (सन् 1943), अमीर इरादेः गरीब इरादे (सन् 1960), चिंतक की लाचारी (सन् 1965)।
- **नाटकः-** कृष्णार्जुन युद्ध (सन् 1918)।
- **कहानीः-** कला का अनुवाद (सन् 1954)।

चतुर्वेदीजी की कविताओं में वैयक्तिक चेतना और प्रणयभाव -

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में वैयक्तिक चेतना और प्रणय-भाव का सुंदर एवं गहन समन्वय मिलता है। उनकी आरम्भिक कविताएं व्यक्तिगत अनुभवों से कम, बल्कि एक व्यापक सामाजिक नैतिक चेतना से ज्यादा अभिप्रेरित रही है। जैसे-जैसे काव्यगत प्रौढ़ता आती गयी, उनकी कविताओं में व्यक्तिगत पीड़ा, स्मृति और अन्र्तमन की गहराइयाँ स्पष्ट रूप से प्रकट होती रहीं। परन्तु यह वैयक्तिकता स्वयं में आत्मनिहित नहीं बल्कि राष्ट्रीयता और मानवीयता के दृष्टिकोण से जुड़ी रहती है। वैयक्तिक चेतना की भांति माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में प्रणय-भाव का रूप लौकिक नहीं अलौकिक, राष्ट्रभक्तिपरक और सौन्दर्यबोध से आपूरित है। इनका प्रणय भाव आत्मकेन्द्रित से राष्ट्रकेन्द्रित परिधि में परिवर्तित होता है।

माखनलाल चतुर्वेदी मुख्यतः एक कवि हैं। वस्तुतः उनके सभी काव्य-संग्रह राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति को समर्पित है, किन्तु समर्पण की एंकातिकता को भंग करते हुए चतुर्वेदीजी की कुछ कविताएं उनकी वैयक्तिक चेतना और प्रणय-भाव से आप्लावित है।

'हिमकिरीटिनी' काव्य संग्रह में कवि हृद्य की पीड़ा की वैयक्तिक अनुभूति और उसके अंतरतल से फूट पड़नेवाले प्रणय-भावबोध के स्वर सूक्ष्म एवं वायवीय उद्गार है। 'जो न बन पाई तुम्हारे' कविता में यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है--

"जो न बन पाई तुम्हारे गीत की कोमल कड़ी।
तो मघुर मघुमास का वरदान क्या है?
तो अमर अस्तित्व का, अभिमान क्या है?
तो प्रणय में प्रार्थना मोह क्यों है?
तो प्रलय में पतन से विद्रोह क्यों है?"[1]

इसी काव्य संग्रह की 'चलो छिया-छी हो अंतर में!' शीर्षक कविता में प्रणय-भाव का सुंदर एवं मनभावन रूप देखते ही बनता है–

"तुम चन्दा मैं रात सुहागन...........
चाहों सी, आहों सी, मनु-
हारों सी, मैं हूँ श्यामल श्यामल
बिना हाथ आये छुप जाते
हो क्यों? प्रिय किसके मंदिर में
चलो छिया-छि हो अंतर में!"[2]

प्रणय की पुकार से दिग-दिगन्त को आकुलित करने और उसमें स्वप्नों के साकार होने की मनोकामना कवि हृद्य को प्रकृति और स्वयं के बीच तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित करने की लालसा भर देती है। 'उड़ने दो घनश्याम गगन में' कविता इसी लालसा को पंख और उड़ान देती है।

"चमक रही कलियाँ चुन लूंगी
कलानाथ अपना कर लूंगी
एक बार 'पी कहाँ' कहूँगी
देखूंगी अपने नैनन में
उड़ने दो घनश्याम गगन में"[3]

माखनलाल चतुर्वेदी के वैयक्तिक चेतना से भरे गीतों में उनकी अंतराभिव्यक्ति शब्दों के रूप में आकार ग्रहण करती है। "हिमतरंगिनी की सबसे सुन्दर रचनाएं वैयक्तिक भाव चेतना के गीत हैं जिनमें कवि ने व्यक्ति वेदना को वाणी दी है।" 4 'वे तुम्हारे बोल!' शीर्षक कविता में व्यक्ति वेदना की स्मृति--

"वह तुम्हारा प्यार, चुम्बन,
वह तुम्हारा स्नेह सिहरन
वे तुम्हारे बोल!
वे अनमोल मोती
वे रजत-क्षण!"[5]

चतुर्वेदीजी प्रेम की पीड़ा एवं तडप्ा का स्वयं ही भोक्ता बनना श्रेयष्कर मानते हैं। इसे वे साझा नहीं करना चाहते। मन की पीड़ा को आँसुओं से धोकर अपने प्रेम को स्वच्छ एवं निर्मल करना चाहते हैं। 'भाई छोड़ो नहीं मुझे' कविता इसी पीड़ा का द्योतक है--

"भाई छोड़ो नहीं मुझे
खुलकर रोने दो
यह पत्थर का हृद्य
आँसुओं से धोने दो,
रहो प्रेम से तुम्हीं
मौज से मंजु महल में,
मुझे दुखों के इसी
झोपड़ी में सोने दो।"[6]

विरह के अंधेरे में आशा की एक सुनहरी किरण प्रकाशमान हो रही है। प्रियतम से मिलने के छिन्नतार संकेत उभरने लगे हैं। आशा ने निराशा भरे मन में एक उत्कंठा भर दी है। बार-बार उस प्रियतम के आने का संकेत नैनों के कैद में आबद्ध हो गये हैं। 'आज नयन के बंगले में' कविता में प्रणय-भाव का दिग्दर्शन किया जा सकता है।

"दोनों कारागृह पुतली के
सावन की झर लाये री सखि!
आज नयन के बंगले में
संकेत पाहुने आये री सखि!"[7]

माखनलाल चतुर्वेदी की वैयक्तिक चेतना और प्रणय-भाव 'समर्पण' काव्य संग्रह में अपेक्षाकृत अधिक भावपूर्ण एवं मार्मिक रूप में अभिव्यक्त हुआ है। संयोग एवं विप्रलंभ प्रेम के प्रतीक ये कविताएं न सिर्फ उनके स्नेहिल मन के छटपटाते भावों का उन्मीलन है बल्कि प्रणय भावों की अभीष्ट अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। यद्यपि 'समर्पण' काव्य-संकलन की कुछ कविताएं विशिष्ट व्यक्तियों पर लिखी गई है। फिर भी प्रेमानुभूति और प्रणय निवेदन से अभिसिक्त ये कविताएं चतुर्वेदीजी की वैयक्तिक चेतना में प्रणय-भाव के महत्व को संपुष्ट करता है। 'तुम्हारा मिलन' कविता में प्रेम के संयोगात्मक स्वरूप का सजीव वर्णन अत्यंत सुन्दर है--

"तुम मिले, प्राण में रागिनी छा गई!

भूलती-सी जवानी नई हो उठी,
भूलती-सी कहानी नई हो उठी,
जिस दिवस प्राण में नेह-बंसी बजी,
बालपन की रवानी नई हो उठी;
कि रसहीन सारे बरस रसभरे हो गये--
जब तुम्हारी छटा भा गई।"[8]

प्रेम के संयोगात्मक रूप को स्मृतियों के रंगीन आकाश बसाए हुए हैं। उसमें बसंत का मधुर रूप हृद्य में आह्लादपूर्ण वातावरण निर्मित कर चुका है। स्मृतियों के मधुर झोंके विरह विदग्धा राधा को कृष्ण के प्रेम में डूबोकर नवीन चेतना का संचार कर रही है। प्रकृति और प्रेम का सुखद संयोग बसंत बनकर आया है। 'स्मृति के बसंत' शीर्षक कविता में बसंत और प्रेम की अभिन्न मादकता अत्यंत सुखदायक है--

"आते हो? वह छवि दरसा दो
रूठा हृद्य-चोर हरषा दो
तोड़-तोड़ मुक्ता बरसा दो
डूबूँ-तैरूँ, सुध न बिसारो
स्मृति के मधुर बसंत पधारो!"[9]

प्रेम, यौवन के आंगन का फूल है। यौवन के आगमन पर प्रेम का पौधा पुष्पित होने लगता है। उसमें मादक एवं सुवासित वायु के झोंके यौवन के द्वार खटखटाने लगते हैं। 'यौवन का पागलपन' कविता में यौवन की नई परिभाषा मिलती है–

"हम कहते हैं बुरा न मानो, यौवन मधुर सुनहली छाया।
सपना है, जादू है, छल है ऐसा
पानी पर बनती-मिटती रेखा-सा
मिट-मिट कर दुनियाँ देखे रोज तमाषा
यह गुदगुदी, यही बीमारी
मन हुलसावे, छीजै काया।"[10]

प्रेम के मधुर व्यापारों में संयोग पक्ष अत्यंत मनोहारी होता है। इसमें समस्त चराचर प्रफुल्लित हो उठता है। ऐसा लगता है जैसे सिमटी-सिमटी -सी प्रकृति अब खिलकर बिखरने लगी है क्योंकि इसमें प्रियतम की छवि निखर उठी है।। 'ध्वनि बिखर उठी' कविता में यही भाव अभिव्यक्त हुआ है–

"हास्य का प्रपात, प्राण-मेरु से गिरा
कि ध्वनि बिखर उठी!
करारविन्द, छवि निखर उठी।"[11]

प्रेम की कुछ सीमाएं, बंधन एवं मर्यादाएं होती हैं। प्रेम का उन्मुक्त, उच्छृंखल एवं मर्यादाहीन रूप चतुर्वेदीजी को स्वीकार भी नहीं। भले ही प्रणय के इस रूप को अंगीकार करने हेतु विरह की अग्नि में क्यों न जलना पड़े। उदात्त प्रेम का उदाहरण उनकी कविता 'वीणा के तार' में देखने को मिलता है–

"विवश मैं तो वीणा का तार!
जहाँ उठी अँगुली तुम्हारी,
मुझे गूँजना है लाचारी,
मुझको कम्पन दिया, तुम्हीं ने,
खुद सह लिया प्रहार!
दिखाऊँ किसे कसक सरकार!
अभागा मैं वीणा का तार!"[12]

प्रेम में मिलन की शीतलता है तो विरह की तप्त ज्वाला भी है। वैयक्तिक चेतना जिसमें दग्ध होकर प्रियतम के मिलन की आकांक्षा और न मिल पाने की तड़प के बीच छटपटाती हुई समस्त जगत को स्वयं की अनुभूतियों में निमज्जित करना चाहती है। ऐसे में 'तुम न हँसो' कविता में इसी छटपटाहट एवं कसक का चित्रण है—

"तुम न हँसो, हँसने से जालिम धोखा और सबल होता है,
मैं हँसने की जड़ खोजूँ तो वह हँसने का कल होता है,
हँसते हो जाने कैसा सा,
बिखर-बिखर पारा झरता है।
स्वयं हार जाता हूँ, देखा,
मुँह से अंगारा झरता है।
तुम न हँसो, हँसने से जालिम धोखा और सबल होता है।"[13]

इसी प्रकार 'सखि कौन' कविता में प्रिय मिलन और उसके अनंतर प्राप्त आत्मिक सुखानुभूति एवं आनंदोपलब्धि का मुखर एवं शब्दरूपात्मक अभिव्यक्ति अत्यंत सुंदर ढंग से वर्णित हुआ है। जो न सिर्फ मानवीय प्रेम का द्योतक है बल्कि ईश्वरीय प्रेम का प्रतीक भी है--

"साँस-साँस में भर आता-सा फिर आता-सा मौन,
स्वर में गूँथ इरादे, में गा उठता है कौन?
स्वर-स्वर पर पहरा देता कुछ लिख लेता-सा मौन,
मेरे कानों में बंशी-रव लाता है सखि कौन?"[14]

माखनलाल चतुर्वेदी यद्यपि प्रणय को ही वरीयता देते हैं किन्तु प्रणय की मार्मिक व्यंजना भी उनकी कविताओं में प्रमुखता से है। "चतुर्वेदीजी जहाँ गीतकार बने हैं वहाँ उनकी सुकुमारता, उनके गीतों की गेयता में देखते ही बनती है। उनकी अनुभूति में ताजगी, कसक, मार्मिकता का मधुर

संस्पर्श और कोमलता की कली चटकते दीखती है।" 15 माखनलाल चतुर्वेदी के प्रणय-भाव की कविताओं में विरह की मार्मिकता, अवसाद के क्षण एवं प्रिय की स्मृति के उठते झंझावात आँसूओं के रूप में नयनों से ढुलक रहे हैं। 'आँसू से' शीर्षक कविता में इसी विरह-भाव की अभिव्यक्ति मिलती है--

"ठहर जरा तुझ से प्यारे के
चरण कमल धुल जाने दे
और जोर से सिसक सकूँ
वे मंजुल घड़ियाँ आने दे।"[16]

प्रिय से न मिल पाने की कसक को नियति मानकर मन के उद्वेग को शांत कर लेते हैं। इसके लिए मन में अब कोई क्षोभ नहीं रहा। इस द्वन्द्वात्मक मनःस्थिति को 'दृग-जल-जमुना' कविता में पूर्णतः तिरोभाव मिला है।

"वे दिन भला किये जो भूले।
दृग-जल-जमुना बढ़ी किन्तु श्यामल वे चरण न पाये,
कोटि-तरंग-बाँह के पंथी, तट मुर्च्छित फिर आये,
अब न अमित! विभ्रम दे, चल--
चल सखि कालिन्दी फूले,
वे दिन भला किया जो भूले।"[17]

माखनलाल चतुर्वेदीजी का नारी के प्रति अत्यंत उदार दृष्टिकोण है। नारी को उन्होने जन्मदात्री, प्राणदात्री, सुखदायक और प्रेमप्रसूना मानते हैं। उनके अनुसार नारी स्वर्ग के द्वार का पथप्रदर्शक है। नारी के प्रति इस प्रकार का प्रणय-भाव ही उनकी कविताओं में उनकी वैयक्तिक चेतना बनकर अभिव्यक्त हुई है। चतुर्वेदीजी का यह वैयक्तिक प्रेम निरपेक्ष न होकर राष्ट्रप्रेम से सम्बद्ध है। वास्तव में उनके लिए प्रेम की सबसे उत्तम कोटि राष्ट्रप्रेम ही है। प्रेम का वास्तविक अर्थ राष्ट्रप्रेम के लिए बलिदान हो जाना है।

निष्कर्षः-

माखनलाल चतुर्वेदीजी का प्रेम सम्बन्धी दृष्टिकोण दूरदर्शी एवं रहस्यात्मक है। त्याग एवं बलिदान की नींव पर आधारित प्रेम अंततः वैयक्तिक चेतना और प्रणय-भाव को स्वयं में आत्मसात कर लेता है। इनकी कविताएं प्रेम की दोनों अवस्थाओं मिलन और विरह में समन्वयात्मक सम्बन्ध रखता है किन्तु 'विरह की पीर' की सत्ता अधिक सुदृढ़ है। इसका कारण युवावस्था में ही उनकी पत्नी की मृत्यु है। हृद्य में भावनाओं के उमड़ते सैलाब को किनारा देने की कोशिश के रूप में प्रणय-भाव के विरह गीत स्वयं सृजित होते रहें और शायद यही कारण है कि राष्ट्रप्रेम के कवि ने अपनी रचनाओं

में प्रणयभाव के गीत भी उतनी ही सिद्दत से लिखें हैं। खासकर पत्नी के श्राद्ध तिथियों पर लिखी हुई रचनाएं वेदना की तीव्रता के व्यंजनात्मक प्रभाव को अभिलक्षित करती है।

सन्दर्भ संकेत -

1. चतुर्वेदी, माखनलाल, हिमकिरीटिनी, जो न बन पाई तुम्हारे, पृष्ठ संख्या-01, भारती भंडार प्रकाशन, लीडर प्रेस प्रयाग, प्रथम संस्करण, संवत 2005
2. चलो छिया-छी हो अंतर में!, उपरिवत्, पृष्ठ संख्या 11-12
3. ’उड़ने दो घनश्याम गगन में, उपरिवत्, पृष्ठ संख्या 23
4. शर्मा, डॉ॰ कृष्णदेव, माखनलाल चतुर्वेदीः व्यक्तित्व एवं कृतित्व, विनोद पुस्तक मंदिर प्रकाशन, आगरा, प्रथम संस्करण, 1979
5. चतुर्वेदी, माखनलाल, हिमकिरीटिनी, वे तुम्हारे बोल, पृष्ठ संख्या-17, भारती भंडार प्रकाशन, लीडर प्रेस प्रयाग, प्रथम संस्करण, संवत 2005
6. भाई छोड़ो नहीं मुझे, उपरिवत्, पृष्ठ संख्या 21
7. आज नयन के बंगले में, उपरिवत्, पृष्ठ संख्या 54
8. चतुर्वेदी, माखनलाल, समर्पण, तुम्हारा मिलन, पृष्ठ संख्या-05, भारती भंडार प्रकाशन, लीडर प्रेस इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, संवत 2013
9. स्मृति के बसंत, उपरिवत्, पृष्ठ संख्या 11
10. यौवन का पागलपन’ उपरिवत्, पृष्ठ संख्या 49
11. ध्वनि बिखर उठी, उपरिवत्, पृष्ठ संख्या 54
12. वीणा के तार, उपरिवत्, पृष्ठ संख्या 69
13. तुम न हँसो, उपरिवत्, पृष्ठ संख्या 100
14. सखी कौन, उपरिवत्, पृष्ठ संख्या 110
15. डॉ॰ रंजन, माखनलाल चतुर्वेदीः एक चिंतन, पृष्ठ संख्या 37, संजय प्रकाशन, वाराणसी, 1978
16. चतुर्वेदी, माखनलाल, समर्पण, आँसू से, पृष्ठ संख्या-29, भारती भंडार प्रकाशन, लीडर प्रेस इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, संवत 2013
17. दृग-जल-जमुना, उपरिवत्, पृष्ठ संख्या 40

*वरीय सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, सुन्दरवती महिला महाविद्यालय, भागलपुर, बिहार।